Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VII, July-2012, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

काव्यकार रघुवीर शरण 'मित्र' व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue VII, July-2012, ISSN 2230-7540

काव्यकार रघुवीर शरण 'मित्र' व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व

Dr. Kulwant Singh

Hindi Department, M.M. (P.G.) College, Fatehabaad (Hariyana)

प्रसिद्ध काव्यकार रघुवीर भारण 'मित्र' जी अपने युग की नवोदित बहुमुखी चेतना के प्रति सजग और सचेत रहे। उनमें अपने युग का प्रतिबिम्ब झलकता है। उन्होने मानव और समाज की प्रतिक्रिया ील व्यवस्था को समझने एवं उसे गति ीलता प्रदान करने के सतत प्रयास किए। नए जीवन मूल्यों की स्थापना करके एक वि वव्यापी बौद्धिक उद्बोध का अनुभव प्रत्येक स्तर पर करते रहे। उनकी साहित्यिक साधना यथार्थ एवं आद र्ा के नवीन स्पन्दनों के सृजन में प्रवाहित हुई।

जीवनवृतः–

राश्ट्रीय चेतना और भारीतय संस्कृति के प्रति निश्ठावान पदम् श्री रघुवीर भारण 'मित्र' का जन्म 9 सितम्बर 1919 को मेरठ क प्रखर दे ाभक्त, स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज सेवी लाला नानक चन्द और कस्तुरी देवी के यहाँ हुआ।

'मित्र' जी का बचपन का नाम बीरो था। वैसे उनकी जन्म–पत्री में जन्म का नाम सेवक राम है। माता–पिता और घर में जो बड़े थे या मोहल्ले में बचपन के साथी बीरो कहकर पुकारते थे। बुजुर्गों ने उनका नाम रघुवीर भारण 'मित्र' रखा था। वे लिखते हैं कि ''माँ जब तक जिन्दा रही मुझे वीरो कहकर ही पुकारती थी। साथ ही पिता, नानी और मौसी आदि सभी बीरो कहती थी। कुछ बड़ा होने पर जहाँ मेरा नाम आदर से लिया जाने लगा कि मुझे बीरो के स्थान पर बीरोजी कहा जाने लगा। रघुवीर भारण 'मित्र' नाम तो बहुत बाद में प्रचलित हुआ। इसका पता मुझे तब चला जब मुझमें कुछ समझदारी आई। जब मेरे मन में सोये हुए गुण प्रकट होने लगे।''[1]

उन्होने अपने बचपन के संस्मरण में आगे लिखा है कि '' आँख मिचौली, गिल्ली डण्डा, गेंद, क्रीड़ा, कबड्डी, जमाल ाही जैसे बचपन के खेल धीरे–धीरे समाप्त हो गए। कबड्डी तो कि ोर काल तक खेलता रहा। एक बार खेलते–खेलते पिण्डली का माँस फट गया। पैर कटने से बचा। इतनी पीड़ा थी उस समय की एक सौ बिच्छुओं के काटने जैसे था।''[2]

शिक्षा–

परिवार के समृद्धि ील न होने के कारण पारिवारिक उतरदायित्वों को भी वहन करना पड़ा। परिणामतः वे सुव्यवस्थित ि ाक्षा अर्जित नहीं कर सके। इन्होने अधिकां ा जीवन व ि ाक्षा सत्संग एवं स्वाध्याय से ही ग्रहण की। कभी किसी स्कूल से ि ाक्षा नहीं ली। वे कभी किसी मान्यता प्राप्त विद्यालय में नहीं गए। तथापि इन्होने लाहौर वि वविद्यालय से 'प्रभाकर' की परीक्षा उत्तीर्ण की। अपनी ि ाक्षा के विशय में उन्होने लिखा है कि–''लगन से, सत्संग से, विद्वानों से, महात्माओं से और पुस्तकों से। सबसे पहले मैनें रामायण से पढ़ना भुरू किया, रामायण भक्त प0 राम आचार्य से लक्ष्मण–पर ुराम संवाद से पढ़ाना भुरू किया। वह संवाद मुझे अभी तक कंठस्थ है। फिर प0 मुरारी लाल भार्मा से व्याकरण पढ़ा। मैं रट्टू था पूरा व्याकरण रट्ट डाला जैसा किताब में लिखा वैसा ही मेरी जुबान पर लिखा है। अंग्रेजी मैनें एक मित्र स्वर्गीय दयाकृश्ण भार्गव से पढ़ी। संस्कृत और हिन्दी का विकास सहपाठियों एवं साथियों से हुआ।''[3]

'मित्र' जी ने अनेक विद्वानों के सम्पर्क में रहते हुए अपना अध्ययन जारी रखा तथा विपुल तथा विविध विधाओं की साहित्य में रचना की। 26 जनवरी, 1976 में 'मित्र' जी को अपने कृतित्व के आधार पर आगरा वि वविद्यालय ने 'डी0 लिट्' की समानोपाधि से विभूशित किया।

इसके पश्चात् भारत सरकार की और से पूर्व राश्ट्रपति स्व0 श्री ज्ञानी जैल सिंह ने उनकी साहित्यिक और सामाजिक सेवाओं के आधार पर 'पदम् श्री' की उपाधि से अंलकृत किया।

विवाह एवं परिवार–

रघुवीर भारण 'मित्र' जी का विवाह लगभग सोलह वर्श की आयु में हो गया था। 'मित्र' जी को सगाई में ग्यारह रूपये आए। साईकिल भी मिली थी। बारात में तीन सौ से अधिक बाराती गए थे। 'मित्र' जी की पत्नी द्रोपदी परिश्रमी और धार्मिक विचारों की थी। उनके तीन बेटे– जय, राके ा और विश्णु है। उनके तीनों बेटे ही बड़े पितृभक्त हैं। 'मित्र' जी ने अपने परिवार के विशय में लिखा है कि – ''अपने पिता के हम तीन बेटे हैं। मेरे से बड़े भाई जगदी ा प्रसाद जी हैं। छोटे भाई का नाम परमात्मा है। हमारे पिता लाला नानक चन्द के दो छोटे भाई रहे, एक का नाम त्रिलोकचन्द और दूसरे का नाम भयामलाल है। अपने दोनों भाइयों को किसी तरह उनके बड़े भाई ने पढ़ाया, उनकी भाादी की। यह मेरे पिता श्री के सरंक्षक थे। मेरे बाबा सब कुछ घाटे में खो चुके थे। अतः मेरे चाचाओं के लिए मेरे पिता श्री ने ही अपना कर्त्तव्य निभाया। मेरी माता कस्तूरी देवी बिना पढ़ी लिखी एक चतुर नारी थी।''[4]

व्यवसाय–

'मित्र' जी माँ सरस्वती के अच्छे आराधक थे। उन्होने दिसम्बर 1956 से 1961 तक आका ावाणी दिल्ली में बच्चों एवं महिलाओं के कार्यक्रम के निर्माता पद को सु ोभित किया, 15 अक्तूबर, 1977 में उनको भारत सरकार द्वारा प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में गठित केन्द्रीय हिन्दी समिति का सदस्य मनोनित किया गया।

www.ignited.in

व्यक्तित्व–

गेंहुआ रंग भरा हुआ गोल चेहरा, क्लीन भोव्ड, मोती के समान सफेद दाँत सब एक पंक्ति में, लम्बी नाक, ऑखों पर च मा, ऊंचा कद, पुश्ट भारीर, बहुत ही आकर्शक था 'मित्र' जी का व्यक्तित्व ।

मिलनसार–

हसमुख प्रवृति के साथ–साथ मिलनसार 'मित्र' जी के व्यक्तित्व की वि ोशता रही है। अपने पिता जी तरह उन्हें भी अधिक से अधिक लोगों से मेल बढाना पसन्द था । वे भारत के प्रथम राश्ट्रपति स्व. श्री राजेन्द्र प्रसाद जी, स्व. राश्ट्रपति श्री जाकिर हुसैन जी, स्व. प्रधानमंत्री श्री मोरार जी देसाई, स्व. प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर भाास्त्री जी, सुविख्यात कवि माखनलाल चतुर्वेदी जी तथा अन्य विभिन्न विद्वानों से साहित्य चर्चा करते रहते थे ।

निडर व कवि रूप में–

उनका व्यक्तित्व निडरता से परिपूर्ण था। वे परतन्त्रता के दिनों में राश्ट्रीय कविताएं रचते थे। क्रान्ति की कविताएं रचते थे, सामाजिक चेतना के गीत गाते थे। उनके स्वर में विद्रोह की वाणी थी। वे लिखते है कि ''मै निडर सिपाही था, ओज का कवि कहा जाता था। आग थी मेरी कविताओं में आग। परतन्त्रता के दिनो में मेरी कविता सुनने के लिए श्रोताओं में उत्साह रहता था। मै जेल में बन्दियों को कविताएं सुनाता था। गली–गली में कविता सुनाता था यद्यापि मै प्रणय का, प्रेम का, करूणा का, क्रोध का गायक था, भावुकता वृंदागान था। कोमल भावनाओं का मधु सम्वाद था, किन्तु पूरे दे ा में भांखनाद कहा जाता था, कविता कही कालिज में, किसी बड़े कवि सम्मेलन के समूह में पढता था तो मेरे साथी कवि घबरा जाते थे। वे समझते थे कि ये स्वयं तो जेल जाने के आदि है, हमको भी आफत में डालेगा।''[5]

स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में–

'मित्र' जी स्वतन्त्रता आन्दोलनों में बढ़–चढ़ कर भाग लेते थे । दे ाभक्ति का गुण उन्हें अपने पिता से विरासत में मिला। 14 अगस्त 1942 को स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने के कारण प्रथम बार उन्हें जेल की यात्रा का पुरस्कार विदे ाी सरकार से प्राप्त हुआ । सन् 1945 की ि ावरात्रि को आर्य समाज की प्रभात फेरी का नेतृत्व करते हुए उनको पुनः तीसरी बार बन्दी बनाया गया। इसी समर्पण भाव को ध्यान में रखते हुए 25वीं स्वतन्त्रता जयन्ती के अवसर पर उतार–चढ़ाव सरकार ने स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में 'मित्र' जी को सम्मानित करते हुए ताम्रपत्र भेंट किया ।

स्पश्टवादिता–

'मित्र' जी का जीवन दे ा का जीवन रहा है। वे कांग्रेस के सदस्य होने के नाते अधिवे ानों में भाग लेते रहे थे । उन्होंने कभी बड़े–से–बड़े नेता का रौब नही माना, क्योकि वे सत्य के प्रतिनिश्ठा रखते थे । एक बार हिन्दी के प्र न पर उनका नेहरू जी के साथ खुलकर सघर्श हुआ । जयपुर के कांग्रेस अधिवे ान में नेहरू जी ने मंच से गरजकर हिन्दी के प्रति कठोर भाब्द कहे तो 'मित्र' जी से रहा न गया । उन्होंने हुँकारकर कहा–'' पंडित जी दे ा के एक महान नेता को खुले मंच से इस प्रकार हिन्दी का अपमान नही करना चाहिए। आप यदि ये कह सकते है कि इस दे ा की भाशा हिन्दी नही होगी तो सारा दे ा कह सकता है इस दे ा की भाशा हिन्दी होगी, आज होगी, कल होगी, परसो होगी और आपको अपने भाब्दों पर प्रायि चत करना पडेगा।''[6]

कृतित्व–

'मित्र' जी ने अपने कृतित्व के बारे में लिखा है कि – '' भिन्न–भिन्न भौलियों में जो भी कथा कहता हूँ, मेरी कहानी होती है। जैसे कोई पात्र रंगमंच पर देवराज इन्द्र बन जाता है। कभी चन्द्रगुप्त का अभिनय करता है । कभी राक्षस बन जाता है, कभी ऋशि, कभी राम, कभी कृश्ण।''[7]

'मित्र' जी का प्रथम राश्ट्रीय महाकाव्य 'परतन्त्र' विक्रमी सम्वत् 2000 में बंसत पंचमी के दिन प्रकाि ात हुआ । राश्ट्रपिता महात्मा गांधी पर महाकाव्य 'जननायक' उन्होने सन् 1949 में साहित्य को दिया, जिसकी भूमिका भारत के राश्ट्रपति डा0 राजेन्द्र प्रसाद जी ने लिखी है। प0 जवाहर लाल नेहरू एवं युग पर आधारित 'मानवेन्द्र' महाकाव्य का विमोचन 23 नवम्बर 1965 को प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर भाास्त्री जी ने किया। इसकी भूमिका राश्ट्रपति जाकिर हुसैन जी ने लिखी और साधुवाद श्री मोरार जी देसाई ने किया । प्रबंधकाव्य 'विजयवरण' 1969 को पाठकों के समक्ष आया। 2500 दोहों का संग्रह 'सिन्धु सरोवर' 1978 में प्रकाि ात हुआ। उन्होंने 30 के लगभग काव्य लिखें। निबंध संग्रह व जीवन चरित्र के क्षेत्र भी उनसे अछूते नहीं रहे और 'उन्होंने कला की कलम' आव यकता और लेख, इतिहास के देवता, हमारे सन्त आदि की रचना की। एक और उन्होंने काव्य, नाटक निबंध आदि विधाओं में लिखा तो दूसरी और बाल साहित्य व प्रौढ साहित्य को भी रचना की।

इस प्रकार उन्होंने लगभग 100 से अधिक पुस्तकों की रचना कर हिन्दी साहित्य की श्री वृद्वि की। उन्होंने अनेक पुस्तकों का सम्पदान भी किया । माध्यमिक ि ाक्षा परिशद का इन्टर का काव्य संकलन 'काव्यजलि'–1945 मेरठ के कवियों की कविताओं का संकलन 'झंकार' उतर प्रदे ा हिन्दी साहित्य सम्मेलन 1974 की स्मारिक, 1976 से 1991 तक की गूजरमल मोदी जयन्ती कवि सम्मेलन की स्मारिकाएं, मेरठ की गतिविधाओं का संग्रह 'मयराश्ट्र–मानस', 'नौचदी कवि सम्मेलन' एवं नौचदी स्मारिकाओं के सम्पादन उल्लेखनीय है।

'मित्र' जी के साहित्य को प्रबुद्व मनीशियों ने सराहा है। जन साधारण ने अपनाया है। कुछ विद्वानों की दृश्टि में –

डा0 सरनाम सिंह भार्मा 'अरूण– ने लिखा है कि '' अपनी व्यापक अनुभूति से 'मित्र' जी ने ऊंचे–नीचे, टेढे–मेढे, उजियारे–अंधियारे विसंवादी घटको को समान रूप से रसवान किया है।''[7]

स्व. राश्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद जी के अनुसार–'मित्र' जी के काव्य में ओज है, सुन्दर वर्णन है, करूणा है और ललकार भी।''[8]

डा. हरिवं ाराय बच्चन के भाब्दों में– ''मित्र जी की रचनाएं देखता हूँ तो ऐसा लगता है जैसे कोई ज्वालामुखी फूट रहा हो और इसमें आग, राख, धुआँ लावा जो कुछ भी 'मित्र' जी की लेखनी से निकल रहा है उसके पीछे कला की जो अनिवार्यता और विव ाता है वह बहुतो के लिए स्पर्दा की वस्तु

होगी। हिन्दी के जिन कवियों ने उसकी स्वाभाविक ध्वनि धारा की और फेरा है उनमें 'मित्र' जी का नाम सदा लिया जायेगा। 'मित्र' जी के साहित्य पर ि ाव स्थापित है।''[9]

इसके अतिरिक्त बहुत से विद्वानों व राश्ट्र नेताओं ने 'मित्र' जी के साहित्य की अनु ंसा की है।

पुरस्कृत साहित्य– 'मित्र' जी के पुरस्कृत साहित्य में महाकाव्य वीरायन–हरियाणा सरकार द्वारा अखिल भारतीय सूर पुरस्कार

महाकाव्य मानवेन्द्र –उतर प्रदे ा सरकार द्वारा अखिल भारतीय निराला पुरस्कार

विजयवरण– उतर प्रदे ा सरकार द्वारा पुरस्कृत

भूमिजा– राज्यस्थान अकादमी द्वारा अखिल भारतीय मीरा पुरस्कार

ज्योति पुरूश– उतर प्रदे ा सरकार द्वारा पुरस्कृत जलते–तारे व प्रतिध्वनि काप्य भी उतर प्रदे ा सरकार द्वारा पुरस्कृत हुए।

उपन्यासों के अन्तर्गत 'आग और पानी', 'ढाल तलवार', 'ओस के ऑसू, उपन्यास उतर प्रदे ा सरकार द्वारा पुरस्कृत हुए । नाटक 'पुराने पेड नये पते' को उतर प्रदे ा सरकार ने प्रसाद पुरस्कार से सम्मानित किया ।

बाल साहित्य में 'अमर रहें यह दे ा', 'भूमि के भगवान', 'महापुरूश', 'सुनो बच्चों' आदि बाल रचनाएं उतर प्रदे ा द्वारा पुरस्कृत हुए । 'कहानियॉ अमर रहे है', 'बीर बालक' को मध्य–प्रदे ा सरकार ने पुरस्कृत किया है।

अंत में कहा जा सकता है कि 'मित्र' जी व्यक्तित्व जहॉ नवीन पाठकों का प्ररेणा का स्त्रोत है वहीं उनकी रचनाएं यथार्थ के धरातल पर आधारित है। तथा पाठकों को साहित्य–सृजन के लिए अपनी और आकर्शित करती है। उसी प्रकार उनका हर पात्र किसी न किसी रूप में उनके सुख–दुख, विचार और अनुभूति से जुड़ा हुआ है। इसके माध्यम से ही 'मित्र' जी के व्यक्तित्व को पहचाना जा सकता है ।

सन्दर्भ

1. रघुबीहर भारण 'मित्र' : जीवन के पन्ने' : पृ0 146
2. वही पृ0 – 115
3. वही पृ0 136
4. वही पृ0 64
5. वही पृ0 158
6. वही पृ0 169
7. वही पृ0 71
8. स्व. डा. अरूणा दुबलि ा, स्मारिकाः पद्मश्री रघुबीर भारण 'मित्र'
9. ''